JANUARY 04
WEEK 02 MONDAY

हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

हिन्दी प्रतिष्ठा, पार्ट III

विषय - भाषा की परिभाषा देते हुए उसके लक्षण.

अतः समाज में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है आपस में रहने के नाते उसे सर्वदा कभी हम स्फुट शब्दों द्वारा या वाक्यों द्वारा अपने दुःख प्रकट करते हैं, तो कभी केवल सर हिलाकर काम चला लेते हैं। 'भाषा' शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। सामान्य रूप से भाषा उन सभी माध्यमों का बोध कराती है जिनसे भावाभिव्यक्ति का काम लिया जाता है।

किसी वस्तु की परिभाषा देना बड़ा कठिन कार्य है। परिभाषा बनाते समय तीन दोषों से बचने की चेष्टा करनी होती है — अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव।

अव्याप्ति — जितने परिभाषा पर लागू होनी चाहिए, उतने पर लागू न हो।

अतिव्याप्ति का अर्थ है जितने पर परिभाषा लागू होनी चाहिए, उससे अधिक पर लागू हो जाय। असंभव दोष तब होता है

परिभाषा किसी पर लागू हो ही नहीं।
* भाषावैज्ञानिकों ने भाषा की अनेक परिभाषाएँ दी हैं और आलोचना करने पर वे सर्वथा निर्दोष नहीं सिद्ध हो पातीं। अव्याप्ति, अतिव्याप्ति और असंभव के अतिरिक्त और भी अनेक दोष हैं, जिनपर परिभाषा बनाते समय ध्यान रखना होता है।

'हेनरी स्वीट' — ध्वन्यात्मक-शब्दों द्वारा विचारों का प्रकटीकरण ही भाषा है।

ओत्तो येस्पर्सन — मानव ध्वन्यात्मक-शब्दों द्वारा अपना विचार प्रकट करता है। मानव मस्तिष्क विचार प्रकट करने के लिए शब्दों का निरन्तर उपयोग करता है। इस प्रकार के कार्य-कलाप को ही भाषा की संज्ञा दी जाती है।

बाबूराम सक्सेना — जिन ध्वनि-चिह्नों द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनिमय करता है, उसे भाषा कहते हैं।

सुकुमार सेन — अर्थवान, कण्ठोद्गीर्ण ध्वनि-समष्टि ही भाषा है।

वस्तुतः भाषा को उसके पूरे या व्यापकतम रूप लें, तो उपर की सभी परिभाषाओं में अव्याप्ति-दोष है। भाषा अपने व्यापकतम रूप में वह साधन है, जिसके

माध्यम से हम सोचते हैं तथा विचारों और भावों को अभिव्यक्त करते हैं। किन्तु भाषा-विज्ञान में जिस भाषा का अध्ययन-विश्लेषण किया जाता है वह भाषा इतनी व्यापक नहीं है। वस्तुतः यदि गहराई से देखें तो भाषा में मूलभूत बातें निम्नांकित हैं :—

(1) भाषा प्रयोक्ता के विचार आदि को श्रोता या पाठक आदि तक पहुँचाती है, अर्थात वह विचार विनिमय का साधन होती है।

(2) भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के उच्चारणावयवों से निःसृत ध्वनि-समष्टि होती है।

(3) भाषा में प्रयुक्त ध्वनि-समष्टियाँ सार्थक तो होती हैं किन्तु उनका भावों और विचारों से कोई संबंध नहीं होता। यह संबंध 'यादृच्छिक' या माना हुआ होता है।

चूँकि ~~भाषा~~ भाषा का उद्देश्य और उपयोग सामाजिक है, अतः व्यक्ति की सीमा पार कर उसे समाज के विस्तृत परिवेश में आना पड़ता है। वस्तुतः भाषा का सामाजिक रूप में सबसे अधिक महत्व होता है। भाषा का अर्थ व्यक्त वाणी। संसार में केवल मनुष्य ही सार्थक वाणी व्यक्त करता है।

" भाषा मुख से उच्चरित उस सार्थक ध्वनि समूहों को कहते हैं, जिसकी

सहायता से मनुष्य अपने विचारों और भावों को दूसरों के समक्ष प्रकट करता है और दूसरों के भावों को समझता है।

मनुष्य का समस्त कार्य-कलाप भाषा से व्याप्त और परिचालित होता है। व्यक्ति-व्यक्ति का संबंध या व्यक्ति-समाज का संबंध भाषा के बिना अकल्पनीय है।

भाषा सम्प्रेषण का मौलिक साधन है। सम्प्रेषण का सांकेतिक, आंगिक, लिखित आदि अनेक रूप हैं। सांकेतिक या आंगिक साधनों की अपूर्णता तो स्पष्ट है ही, लिखित साधन भी उससे मुक्त नहीं है। उच्चरित भा में ध्वनि के आरोह-अवरोह, काकु आदि की भंगिमा के द्वारा जो प्रभाव उत्पन्न हो जाता है वह लिखित भाषा में असम्भव है।

भाषा के तीन रूप होते हैं — वाणी, भाषा और अधिभाषा। अर्थात भाषा की स्थिति तीन प्रकार से संभव है:— व्यक्ति में, समुदाय में, सामान्य अमूर्त रूप में। सामान्य या अमू- रूप भाषा की वह व्यापकता है जिसमें … का अवकाश नहीं। वहाँ पहुँचकर भाषा नि… हो जाती है, किन्तु शेष व्यावहारिक है।